QUR'AAN MAJEED

PARA NO.30 - 'AMMA

WITH
TRANSLATION AND TRANSLITERATION
IN HINDI

BY
ABDUL WAHEED KHAN

QUR'AAN MAJEED

PARA NO.30 - 'AMMA

WITH
TRANSLATION AND TRANSLITERATION
IN HINDI

BY
ABDUL WAHEED KHAN

पारा नं० 30 के सूरह की लिस्ट

सूरह नं०	सूरह का नाम	शाने नुज़ूलियत नं०	पेज नं०
78	नबा - बड़ी ख़बर	80	20
79	नाज़िआत - फ़रिश्ते जो रूह क़ब्ज़ करते हैं	81	28
80	अ़बासा - तेवर चढ़ाये	24	36
81	तक वीर - सब लपेट दिया जायेगा	7	44
82	इन्फ़ि तार - आसमान फ़ट जायेगा	82	50
83	मुत़फ़्फ़ि - फ़ीन - धोके बाज़ (तत फ़ीफ़)	86	54
84	इन्शि क़ाक़ - आसमान फ़ट जायेगा	03	62
85	बुरूज - सितारों के क़िले	27	70
86	त़ारिक़ - रात का तारा	36	76
87	अअ़्ला - आ़ली शान	8	80
88	ग़ाशियह - सारे आलम पर छा जाने वाली आफ़त	68	84
89	फ़ज्र - सुबह सादिक़	90	88
90	बलद - शहर मक्का	35	94
91	शम्स - सूरज	26	98
92	लैल - रात	9	102
93	ज़ुहा - दिन	11	106
94	अलम् नश् रह् - दिल खोल दिया	12	110
95	तीन - अंजीर	28	114
96	अ़लक़ (इक़रा) - ख़ून का दाग़	1	118
97	क़द्र - बड़ी क़द्रो मनज़लत वाली रात	25	122
98	बय्यिना - खुली दलील	100	124
99	ज़िल् ज़ाल - ज़ल् ज़ला	93	128
100	आ़दि यात - तेज़ घोड़े	14	130
101	क़ारि अ़ह् - अ़ज़ीम हादसे वाला दिन	30	132
102	तकास़ुर - दौलत समेटने की दौड़	16	136
103	अ़स्र - गुज़रे ज़माने	13	138
104	हुमाज़ा - ताने देने वाला चुग़ल ख़ोर	32	140
105	फ़ील - हाथी	19	142
106	क़ुरैश - क़बीला क़ुरैश	29	144

सूरह् नं०	सूरह् का नाम	आयेनुज़ूलिया नं०	पेज नं०
107	माऊ़ून - पड़ोसियों की ज़रूरतें	17	146
108	कौसर - निअ़्मतों की ज़्यादती	15	148
109	काफ़िरून - काफ़िर लोग	18	150
110	नस्र - अल्लाह की मदद	114	152
111	लहब - आग में जलने वाला शख्स	6	154
112	इख़्लास - ख़ालिस अ़क़ीदा	22	156
113	फ़लक़ - सुबह सादिक़	20	158
114	नास - इंसान	21	160
= 37 सूरह्			

बिस् मिल्ला हिर् रह्मा निर् रहीम ○
अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं जो बड़ा मेहरबान निहायत वाला है.

क़ुरआन मजीद को छूने और तिलावत करने के बारे में कुछ हिदायात :-

1. ये अल्लाह की आसमानी किताब है. इस लिये इसे संभाल कर छूना और अदब से पढ़ना चाहिये.
2. क़ुरआन मजीद को छुओ तक भी नहीं, अगर नहा धोकर और वुज़ू करके पाक साफ़ ना हो गये हो.
3. अदब के लिहाज़ से क़ुरआन मजीद को ऊंची और साफ़ सुथरी जगह पर हिफ़ाज़त से रखिये.
4. क़ुरआन मजीद के वरक़ अगर फ़ट जायें तो उन्हें ज़मीन में या समुन्दर या दरया में दफ़ना दें लेकिन कभी भी जलायें नहीं.
5. क़ुरआन मजीद को उठाते और रखते वक़्त मूं से चूमें और माथे पर अदब से लगायें.
6. तिलावत करते वक़्त मूं खाना-ए-काबा की तरफ़ करें.
7. क़ुरआन मजीद की तिलावत करते वक़्त अल्लाह से लौ लगायें - अल्लाह देख रहा है.
8. क़ुरआन मजीद के नये पढ़ने वालों को किसी और से मदद लेना चाहिये जो क़ुरआन मजीद के लफ़्जों का सही तलफ़्फ़ुज़ (उच्चारण) जान्ता हो.
9. क़ुरआन मजीद को जितना ज़्यादा पढ़ेंगे, अल्लाह उतना ही ज़्यादा सबाब देगा. इसका अलत् सुबह पढ़ना ज़्यादा अफ़ज़ल है.
10. हर शख़्स को आख़िर कार अरबी लिखावट में लिखे हुए क़ुरआन मजीद को ही पढ़ना सीखना चाहिये.

गुज़ारिश

बिस् मिल्ला हिर् रह्मा निर् रहीम ○

लफ़्ज़ "क़ुरआन" के माइने हैं जो बार बार पढ़ा जाता है. दुनिया में दूसरी और कोई किताब है ही नहीं जो इतनी ज़्यादा पढ़ी जाती हो जितना क़ुरआन मजीद पढ़ा जाता है. करोड़ों लोग इसकी रोज़ाना तिलावत करते हैं. दुनिया भर की मसजिदों में इसकी आयात दिन में पाँच दफ़ा पढ़ी जाती हैं.

2 अल्लाह ने क़ुरआन को सारी इंसानियत के लिये नाज़िल किया है (सूरह 38 - आयह 87) क़ुरआन की तालीम दुनिया के हर इंसान के लिये है. इस लिए क़ुरआन मजीद को वो सब लोग पढ़ें जो इसे पढ़ना चाहते हों.

3 क़ुरआन मजीद को अरबी रस्-मुल्-ख़त् (यानी लिखावट में) पढ़ना हक़ीक़त में रूहानी तौर पर सबसे अफ़ज़ल है, लेकिन, अगर कुछ लोग ऐसा न कर सकें तो वो अपनी जानी हुई ज़बान में ही क़ुरआन को पढ़ें और अपनी रूहानी प्यास को बुझायें. बेशक़ ये अल्लाह का कलाम है. और अगर हम सिर्फ़ तरजुमा ही तरजुमा पढ़ेंगे तो माइने तो समझ में आ ही जायेंगे लेकिन अल्लाह के कलाम का वो रूहानी असर और कमाल निकल जायेगा जिसके लिये एक पाक रूह अफ़सोस से बे चैन रहा करती है.

4 क़ुरआन मजीद को हिंदी लिखावट में लिखने की कई कोशिशें पिछले बरसों में हो चुकी हैं. इन सारी कोशिशों में अरबी के लफ़्ज़ों का सही सही तलफ़्फ़ुज़ (यानी उच्चारण) नहीं आ पाता. अल्लाह तआला ने मुझे एक नई तरकीब सुझा दी. ये तरकीब निहायत कामयाब रही. तो उसी तरकीब से मैंने पूरा क़ुरआन मजीद लिख डाला. अब हिंदी लिखावट में भी (जैसे मैंने लिखा है) क़ुरआन मजीद की बिलकुल सही तिलावत हो जाती है. पूरा क़ुरआन मजीद कई बार कई हाफ़िज़े क़ुरआन और आलिमों को सुनाया जा चुका है.

5 क़ुरआन मजीद को हिंदी लिख़ावट में लिखने के लिये नीचे दी हुई तीन बातें पहले ही पूरी कर ली गई हैं.

(a) पहले- हिंदी ज़बान के हरूफ़ों (LETTERS) को अरबी के 28 हरूफ़ों (LETTERS) के बिलकुल बराबर के तलफ़्फ़ुज़ (उच्चारण PRONUNCIATION) का बनाया गया है. देखिये टेबल एक, दो और तीन.

टेबल नं: 1

अरबी के 28 हरूफ़ (LETTERS) और बराबर के हिंदी हरूफ़

S. No.	ARABIC LETTER	HINDI LETTER	PRONUNCIATION
1	ا	अ	अलिफ़
	ء	अ्	हम्ज़ा
2	ب	ब	बा
3	ت	त	ता
	ة	त्	ता
4	ث	स	सा
5	ج	ज	जीम
6	ح	ह्	ह़ा
7	خ	ख़	ख़ा
8	د	द	दाल
9	ذ	ज	ज़ाल
10	ر	र	रा
11	ز	ज़	ज़ा
12	س	स	सीन
13	ش	श	शीन
14	ص	स़	स़ाद
15	ض	ज़	ज़्वाद
16	ط	त़	त़ा
17	ظ	ज	ज़ा

S. No	ARABIC LETTER	HINDI LETTER	PRONUNCIATION
18	ع	अ	अ़ैन
19	غ	ग़	ग़ैन
20	ف	फ़	फ़ा
21	ق	क़	क़ाफ़
22	ک	क	काफ़
	ك		
23	ل	ल	लाम
24	م	म	मीम
25	ن	न	नून
26	و	व	वाव
27	ه	ह	हा
	ھ		
28	ى	य	या
	ے		

टेबल नं॰ 2

जिनका उच्चारण (तलफ़्फ़ुज़ / PRONUNCIATION) क़रीब क़रीब है

S. NO	ARABIC LETTER	HINDI LETTER	PRONUNCIATION
1	ا	अ	अलिफ़
2	ء	अ़	हम्ज़ा
3	ع	अ़	ऐन
1	ت	त	ता
2	ة	त़	ता
3	ط	त़	त़ा
1	س	स	सीन
2	ش	श	शीन
3	ص	स़	स़ाद
4	ث	·स	·सा
1	ذ	ज	ज़ाल
2	ظ	ज़	ज़ा
3	ز	ज़	ज़ा
4	ض	ज़	ज़्वाद

टेबल नं॰ 3

ख़ास हरूफ़ / KEY LETTERS

ء	ع	ث	ح	ص	ط	ظ	ز	ض	ذ
अ़	अ़	·स	ह़	स़	त़	ज़	ज़	ज़	ज़

(b) दूसरे - एक से ज़्यादा मात्राएं (यानी चार तक) इस्तेमाल की गई हैं ताके अरबी लिखावट में लिखे हुए क़ुरआन मजीद की तरह ज़बर, ज़ेर और पेश का सही सही तलफ़्फ़ुज़ (उच्चारण PRONUNCIATION) निकल सके. जितनी मात्रायें होंगी आवाज़ को उतना ही ज़्यादा खींचा जायेगा. देखिये टेबल नं. 4

टेबल नं. 4

जितनी मात्रायें हों उतनी ही आवाज़ को खींचियेगा

S.NO	ARABIC LETTER	EQUIVALENT IN HINDI	STRETCH SOUND TIME IN SECONDS
1	آ	आ	ONE
2	آا	आा	TWO
3	آاا	आाा	THREE
4	آاآا	आाआा	FOUR
1	إ	इ /	ONE
2	إي	ई /	TWO
3	إيي	ईई /	THREE
4	إيإي	ईई /	FOUR
1	ؤ	उ	ONE
2	ؤو	उउ	TWO
3	ؤوو	उउउ	THREE
4	ؤوؤو	उउउउ	FOUR

(c) तीसरे - अरबी लिखावट में लिखे हुए क़ुरआन मजीद की तरह ही रुमूज़े औक़ाफ़ (विराम चिह्न / PUNCTUATION SIGNS) इस्तेमाल किये गये हैं. देखिये टेबल नं. 5

टेबल नं० 5

"STOP" SIGNS			"DO NOT STOP" SIGNS		
S. NO.	SIGN	NAME OF SIGN	S. NO	SIGN	NAME OF SIGN
1	○	आयत	1	لا	ला
2	△	आयत	2	ص	साद (अगर चाहें तो
3	ط	मुतलक़	3	ز	ज़ा
4	م	लाज़िम	4	صلے	सला
5	ج	जायज़	5	ق	क़ाफ़
6	وقف	वक़्फ़ा	6	ک	काफ़ (यहां इससे पहले आये हुए निशान के मुताबिक "रुकिये" या "नहीं रुकिये".)
7	صل	सल			
8	قف	क़िफ़			
9	∴	मौनका (ऐसे दो निशानों में से किसी एक पर रुकिये.)			नोट- अगर एक से ज्यादा निशान हों तो सबसे ऊपर वाले निशान को मानें. और अगर निशान एक ही लाइन में हों तो आखिरी निशान को मानें.
10	سکتہ	सकता (यहीं पर सांस ना तोड़िये)			

6 कई कोशिशों के बाद मैं इस नतीजे पर पहुंचा हूं के सादा हिंदी में लिखे हुए क़ुरआन मजीद की आवाज़ अरबी में लिखे हुए क़ुरआन मजीद की तरह निकल ही नहीं सकती जब तक के सादा हिंदी में कुछ रद्दो बदल ना की जाये. जैसा के संस्किरत भाशा मेंभीहै.

7 पिछले बरसों में कुछ लोगों ने अरबी क़ुरआन को सीधी सीधी हिंदी में ही लिख डाला है जिसकी वजह से ना उसे सही सही पढ़ा जा सकता है और ना ही अरबी हरूफ़ का सही तलफ़्फ़ुज़ ही निकल सकता है. इस तरह ना सिर्फ़ पढ़नेमें ग़लतियां होती हैं बल्के क़ुरआन मजीद के पढ़ने की सारी ख़ूबसूरती ही जाती रहती है.

8 लेकिन जो तरीक़ा मैंने इस्तेमाल किया है इससे क़ुरआन मजीद

के हरूफ़ सही सही बोले जा सकते हैं. और क़ुरआन मजीद की तिलावत में ख़ूबसूरती भी आ जाती है. और फिर जब क़ुरआन मजीद सही सही पढ़ा जाये तो फिर वो दिलों को हिला कर रख देता है. फिर अल्लाह के कलाम का असर दिल और दिमाग़ पर भी भरपूर आता है.

9 इस हिंदी लिखावट में लिखे हुए क़ुरआन मजीद में मैंने आपकी सहूलियत के लिये पहले से ही अरबी लफ़्ज़ों का सही तलफ़्फ़ुज़ (उच्चारण/PRONUNCIATION) बना कर लिख दिया है. अब पढ़ने वाले को सिर्फ़ जैसा लिखा है वैसे ही पढ़ते चले जाना चाहिये. वो इस तरह तलफ़्फ़ुज़ में कहीं भी ग़लती नहीं कर सकेगा.

10 पढ़ने वाले को क़ुरआन मजीद के रमोज़े औक़ाफ़ (PUNCTUATION SIGNS) का ख़्याल रखते हुए पढ़ते चले जाना है क्योंकि क़ुरआन मजीद में "रुकने" (STOP) और "नहीं रुकने" (DO NOT STOP) दोनों के अलग अलग निशानात हैं (देखिये टेबल नं. 5).

Abdul Waheed Khan
Servant of ALLAH

No1 SURAH FATIHAH(5)

(The Opening prayer)

MAKKI, RUKU 1, AYATS 7, WORDS 25, LETTERS 123

IN THE NAME OF ALLAH, MOST GRACIOUS, MOST MERCIFUL.

1 Praise be to ALLAH, the Cherisher and the Sustainer of the universe,

2 Most Gracious, Most Merciful,

3 Master of the Day of Judgement.

4 We worship only you, and ask only you for help.

5 Show us the straight path,

6 The path of those on whom YOU have bestowed YOUR grace;

7 Not the path of those who earned YOUR wrath, and not the path of those who went astray.

नं॰1 सूरह फ़ातिहह (5)

(इफ़्ति ताही दुआ)

मक्की, रुकूअ 1, आयात 7, लफ़्ज़ 25, हुरूफ़ 123

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 सब तरह की तारीफ़ें अल्लाह ही के लिये हैं, जो तमाम कायनात का रब है,

2 बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है,

3 जो मालिक है इंसाफ़ के दिन का

4 हम तेरी ही इबादत करते हैं और तुझ ही से मदद मांगते हैं.

5 हमें सीधे रास्ते चला,

6 उन लोगों का रास्ता जिन पर तू अपना फ़ज़्ल और करम करता रहा;

7 नाके उनका रास्ता जिन पर तेरा ग़ज़ब हुआ, और नाही उनका जो रास्ते से भटक गये.

नं॰1 सूरह् फ़ातिह़ह् (5)

मक्की, रुकूअ़ 1, आयात 7,
लफ़्ज़ 25, हुरूफ़ 123

बिस् मिल्लाहिर् रह़्मानिर् रह़ीम ○

1 अल् ह़म्दु लिल् लाहि रब्बिल्
आ़लमीन ○

2 अर् रह़्मानिर् रह़ीम ○

3 मालिकि यौमिद्दीन ○

4 इय्याका नअ़्बुदु व
इय्याका नस्तअ़ीन ○

5 इह्दिनस् सिरात़ल् मुस्
तक़ीम ○

6 सिरात़ल् लज़ीना अन्
अ़म्ता अ़लैहिम् ○

7 ग़ैरिल् मग़्ज़ूबि अ़लैहिम्
व लाज़्ज़ाल्लीन ○

سُوْرَةُ الْفَاتِحَةِ مَكِّيَّةٌ ٥

١- بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

٢- اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ○

٣- الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

٤- مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ○

٥- اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ○

٦- اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ○

٧- صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۙ

غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ○

No 78 SURAH NABA (80)

(THE GREAT NEWS)

MAKKI, RUKUS 2, Ayats 40,
WORDS 174, LETTERS 801

IN THE NAME OF ALLAH, MOST GRACIOUS, MOST MERCIFUL.

1 Regarding what subject are they (disbelievers) disputing?
2. Is it regarding the great news (of the Day of Judgement)?
3 About which they hold difference of opinion (from the Believers).

4 Surely they will come to know (about it) soon.
5 For sure, they will come to know (about it) soon.
6 Have WE not made the earth a spread up of expanse?
7 And (have WE not) established the mountains on it as tent-pegs?
8 And (have WE not) created you in pairs (male female)?
9 And (have WE not) made the sleep to rest for you?
10 And (have WE not) made out the night as a covering cloak?
11 And (have WE not) made the day to seek the livelihood?
12 And (have WE not) established over you firmly seven heavens?

नं. 78 सूरह् नबा

(बड़ी ख़बर)

मक्की, रुकूअ़ 2, आयात 40,
लफ़्ज़ 174, हुरूफ़ 801

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 ये (क़ियामत से इन्कार करने वाले) लोग आपस में किस चीज के बारे में पूछ गछ कर रहे हैं?
2 क्या बड़ी ख़बर (यानी क़ियामत) के बारे में?

3 जिसके बारे में ये लोग (ईमान वालों से) अलग राय रखते हैं.

4 तो इन्हें जल्द ही मालूम हो जायेगा.

5 हां, इन्हें जल्द ही मालूम हो जायेगा.

6 क्या हमने (यानी अल्लाह ने) ज़मीन को बिछौना नहीं बनाया?
7 और पहाड़ों को (उस पर) मेंखें बनाकर नहीं जमाया?
8 और तुमको क्या जोड़ा जोड़ा (नर मादा) नहीं बनाया?
9 और क्या नींद को तुम्हारे लिये आराम का सबब नहीं बनाया?
10 और क्या रात को परदा पोश की तरह नहीं बनाया?
11 और क्या दिन को रोज़ी तलाश करने के लिये नहीं बनाया?
12 और क्या हमने तुम्हारे ऊपर सात मज़बूत आसमान नहीं बनाये?

नं॰ 78 सूरह् नबा (80)

मक्की, रुकूअ़ 2, आयात 40,
लफ़्ज़ 174, हुरूफ़ 801

बिस् मिल्ला हिर् रह़्मा निर् रह़ीम ○

1 अ़म्मा यता साआ लून ○

2 अ़निन् नाबा इल् अ़ज़ीम ○

3 अल् लज़ी हुम् फ़ीहि मुख़् तलि फ़ून ○

4 कल्ला स यअ़्ला मून ○

5 सुम्मा कल्ला स यअ़्ला मून ○

6 अलम् नज् अ़लिल् अर्ज़ा मिहादा ○

7 वल् जिबाला औ ताद़ा ○

8 व ख़लक़्नाकुम् अज़् वाजा ○

9 व जअ़ल्ना नौमा कुम् सुबाता ○

10 व जअ़ल् नल् लैला लिबासा ○

11 व जअ़ल् नन् नहारा मअ़ाशा ○

12 व बनैना फ़ौक़ा कुम् सब् अ़न् शिदादा ○

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

١- عَمَّ يَتَسَآءَلُوْنَ ۝

٢- عَنِ النَّبَاِ الْعَظِيْمِ ۝

٣- الَّذِىْ هُمْ فِيْهِ مُخْتَلِفُوْنَ ۝

٤- كَلَّا سَيَعْلَمُوْنَ ۝

٥- ثُمَّ كَلَّا سَيَعْلَمُوْنَ ۝

٦- اَلَمْ نَجْعَلِ الْاَرْضَ مِهٰدًا ۝

٧- وَّالْجِبَالَ اَوْتَادًا ۝

٨- وَّخَلَقْنٰكُمْ اَزْوَاجًا ۝

٩- وَّجَعَلْنَا نَوْمَكُمْ سُبَاتًا ۝

١٠- وَّجَعَلْنَا الَّيْلَ لِبَاسًا ۝

١١- وَّجَعَلْنَا النَّهَارَ مَعَاشًا ۝

١٢- وَّبَنَيْنَا فَوْقَكُمْ سَبْعًا شِدَادًا ۝

13 And placed within them a brightly illuminating lamp (the Sun)

14 And WE sent down abundant rain from water laden clouds.

15 So that through it WE may produce grain and vegetables.

16 And dense gardens of thick foliage.

17 Surely the time for the Day of Judgement is fixed.

18 The Day the trumpet is blown, you people will come out (of your graves) in crowds upon crowds.

19 The heaven will be opened wide and it would turn into all doors and doors.

20 And the mountains would be put into motion and would become as if they were a mirage of sand.

21 Surely, Hell lies in wait (for the sinners).

22 It is an abode for the transgressors.

23 There, they would live for ages.

24 There, they shall not find any coolness nor anything to drink.

13 और उनमें एक रौशन चिराग़ (यानी) सूरज) बनाया.

14 और बादलों से मूसला धार बारिश बरसाई.

15 ताके उससे हम अनाज और सब्जा पैदा करें.

16 और घने घने बाग़ उगाये.

17 बेशक़ फ़ैसले के दिन का एक वक़्त मुक़र्रर है.

18 जिस दिन सूर फूंका जायेगा तो तुमलोग फ़ौज दर फ़ौज (अपनी क़ब्रों से) निकल कर चले आ रहे होगे.

19 और आसमान खोल दिया जायेगा हत्ता के वो दर वाज़े ही दर वाज़े हो कर रह जायेगा.

20 और पहाड़ चलाये और हिला दिये जायेंगे यहां तक के वो चमकती हुई रेत होकर रह जायेंगे.

21 बेशक़ दोज़ख़ (गुनह गारों की) घात में है.

22 वो (दोज़ख़) सरकशों का ठिकाना है.

23 वहां वो मुद्दतों पड़े रहेंगे.

24 वहां, वो ना ठंडक का, और नाही कुछ पीने का मज़ा चख़ सकेंगे.

13 व जअ़ल्ना सिराजंव् वह् हाजा ॥

١٣- وَجَعَلْنَا سِرَاجًا وَّهَّاجًا ۝

14 व अन् ज़ल्ना मिनल् मुअ़् सिरातिमा ॥ ज़ान् ·सज् जाजा ॥

١٤- وَأَنْزَلْنَا مِنَ الْمُعْصِرٰتِ مَآءً ثَجَّاجًا ۝

15 लि नुख़् रिजा बिही ह़ब् बंव् व नबातंा ॥

١٥- لِّنُخْرِجَ بِهٖ حَبًّا وَّنَبَاتًا ۝

16 व जन्नातिन् अल् फ़ाफ़ा ॥

١٦- وَجَنّٰتٍ اَلْفَافًا ۝

17 इन्ना यौमल् फ़स्लि कान मीक़ातंा ॥

١٧- اِنَّ يَوْمَ الْفَصْلِ كَانَ مِيْقَاتًا ۝

18 यौमा युन् फ़ख़ु फ़िस् सूरि फ़ तअ़् तून अफ़् वाजा ॥

١٨- يَّوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّوْرِ فَتَاْتُوْنَ اَفْوَاجًا ۝

19 व फ़ुति ह़तिस् समा ॥ उ फ़ कानत् अब् वाबा ॥

١٩- وَفُتِحَتِ السَّمَآءُ فَكَانَتْ اَبْوَابًا ۝

20 व सुय्यिरा तिल् जिबालु फ़ कानत् सराबा ॥

٢٠- وَسُيِّرَتِ الْجِبَالُ فَكَانَتْ سَرَابًا ۝

21 इन्ना जहन्नमा कानत् मिर् साद़ा ॥

٢١- اِنَّ جَهَنَّمَ كَانَتْ مِرْصَادًا ۝

22 लित्ताग़ीना मआबा ॥

٢٢- لِّلطّٰغِيْنَ مَاٰبًا ۝

23 लाबि ·सीना फ़ीहा अह् क़ाबा ॥

٢٣- لّٰبِثِيْنَ فِيْهَآ اَحْقَابًا ۝

24 ला यज़ूक़ूना फ़ीहा बर् दंव् वला शराबा ॥

٢٤- لَا يَذُوْقُوْنَ فِيْهَا بَرْدًا وَّلَا شَرَابًا ۝

25 Except boiling water and running pus.

26 And that will be the fitting recompense of their ill deeds.

27 For, they never used to expect any accountability of their deeds.

28 And they had rejected OUR Ayats (revelations) as mere lies.

29 And WE have preserved an account of every thing in a Book.

30 So taste the fruit of your ill deeds. WE shall add nothing to your condition except even more torment.

Ruku'a (Section) 2

31 For the righteous (doer of good deeds) (heaven) will be the achievement of their hearts desire.

32 With gardens and grape vines.

33 Having maidens of same age.

34 And cups full to the brim.

35 There they will not hear any vain talk nor any lie.

36 This is the reward from your RABB. Given - well calculated.

37 From the RABB of the heavens

25 सिवाये गरम पानी और बहती पीप के.

26 ये होगा उनकी बद करतूतों का भरपूर बदला.

27 क्योंकि वो किसी हिसाब किताब की उम्मीद नहीं रखते थे.

28 और उन्होंने हमारी (यानी अल्लाह की) आयात को बिल्कुल झूठला दिया था.

29 हमने (यानी अल्लाह ने) हर चीज़ को लिख रखा है.

30 तो अब अपने किये का मज़ा चखो. हम तुम्हारे लिये किसी चीज़ में इज़ाफ़ा नहीं करेंगे सिवाये तुम्हारे अज़ाब में.

रुकूअ (सैक्शन) 2

31 और मुत्तक़ी (परहेज़गारों) के लिये वो (जन्नत) है जो कामयाबी का मुक़ाम है.

32 उनमें बाग़ात और अंगूरों की बेलें हैं.

33 और उनमें हम उम्र नौजवान औरतें हैं.

34 और छलकते हुए प्याले.

35 वहां वो ना कोई बेहूदा बात सुनेंगे ना कोई झूठ.

36 ये है तुम्हारे रब की तरफ़ से इनाम. हिसाब किताब से दिया हुआ बदला.

37 उस रब की तरफ़ से जो आसमानों

25 इल्ला ह़मीमं व ग़स्साक़ा ॥	٢٥- إِلَّا حَمِيمًا وَّ غَسَّاقًا ۝
26 जज़ाअ़न् अंव् वि फ़ाक़ा ॥	٢٦- جَزَآءً وِّفَاقًا ۝
27 इन्ना हुम् कानू ला यर्जूना ह़िसाबा ॥	٢٧- إِنَّهُمْ كَانُوا لَا يَرْجُوْنَ حِسَابًا ۝
28 व कज्जबू बि आयातिना किज्जाबा ॥	٢٨- وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا كِذَّابًا ۝
29 व कुल्ला शैइन् अह़्सैना हु किताबा ॥	٢٩- وَكُلَّ شَيْءٍ اَحْصَيْنٰهُ كِتٰبًا ۝
30 फ़ ज़ूक़ू फ़ लन् नज़ीदा कुम् इल्ला अ़ज़ाबा ॥	٣٠- فَذُوْقُوْا فَلَنْ نَّزِيْدَكُمْ اِلَّا عَذَابًا ۝
रूकूअ़ (सैक्शन) 2	
31 इन्ना लिल् मुत्तक़ीना मफ़ाज़ा ॥	٣١- اِنَّ لِلْمُتَّقِيْنَ مَفَازًا ۝
32 ह़दाइक़ व अ़ग़्नाबा ॥	٣٢- حَدَآئِقَ وَاَعْنَابًا ۝
33 व कवा इ़बा अत्राबा ॥	٣٣- وَّكَوَاعِبَ اَتْرَابًا ۝
34 व कअ़्सन् दिहाक़ा ॥	٣٤- وَّكَاْسًا دِهَاقًا ۝
35 ला यस्मअ़ूना फ़ीहा लग़्वं व ला किज्जाबा ॥	٣٥- لَا يَسْمَعُوْنَ فِيْهَا لَغْوًا وَّلَا كِذّٰبًا ۝
36 जज़ाअ़न् अम् मिर् रब्बिका अ़त़ाअ़न् अन् ह़िसाबा ॥	٣٦- جَزَآءً مِّنْ رَّبِّكَ عَطَآءً حِسَابًا ۝
37 रब्बिस् समा वाति वल् अर्ज़ि	٣٧- رَّبِّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ

and the earth and all that lies between them, Most Gracious, with WHOM none can dare speak a word.

38 The Day when the Spirit (i.e Jibreel 'Allehis Salaam) and Angels will stand in rows upon rows. They will not speak except who is permitted by AR-RAHMAN and says only what is right.

39 That Day of Judgement is a certainty. So, whoever likes he may prepare a way to his RABB.

40 WE have indeed warned you of a coming calamity which is near. It will be the Day when man will see what (of his deeds) he had sent ahead and the Disbelievers will say- "Alas! Would that I were a mere dust!"

और ज़मीन और जो कुछ इन दोनों के बीच है उन सबका मालिक है, बड़ा मेहरबान, किसी को मजाल नहीं के वो उससे बात भी कर सके.

38 उस दिन रूह (यानी जिबरील अलैहिस सलाम) और मलाइका (यानी फ़रिश्ते) सफ़ें बांधे खड़े होंगे. कोई बोल ना सकेगा सिवाये उसके जिसे रहमान इजाज़त दे और जो ठीक बात कहे.

39 उस क़ियामत के दिन को आना ही है. अब जिसका जी चाहे वो अपने रब की तरफ पलटने का रास्ता अख़्तियार कर ले.

40 हमने (यानी अल्लाह ने) तुम लोगों को उस अज़ाब से डरा दिया है जो क़रीब आ गया है. उस दिन हर शख़्स को सब कुछ देख लेगा जो उसने अपने हाथों आगे भेजा है. और काफ़िर कहेगा- "काश! मैं मिट्टी होता!"

वमा बैना हुमर् रह्मानि लाा
यमलि कूना मिन्हु खिताबा ۝

38 योमा यक़ूमुर् रूहु वल् मलाइ
कतु सफ़्फ़ा ۝ ۝ लाा याता
कल्ला मूना इल्लाा मन् अज़िन्ना ल
हुर् रह्मानु व क़ाला सवाबा ۝

39 ज़ालि कल् योमुल् हक़्क़ु ۝ फ़
मन् शाा अत्ता इला
रब्बिही मआबा ۝

40 इन्नाा अन् जर्नाा कुम् अज़ाा
बन् क़रीबा ۝ ۝ योमा यन्
ज़ुरुल् मरउ मा क़द्दा मत् यदाहु
व यक़ूलुल् काफ़िरु या लैतनी
कुन्तु तुराबा ۝

وَمَا بَيْنَهُمَا الرَّحْمٰنِ
لَا يَمْلِكُوْنَ مِنْهُ خِطَابًا ۝

٣٨- يَوْمَ يَقُوْمُ الرُّوْحُ وَالْمَلٰٓئِكَةُ صَفًّا ۙ
لَّا يَتَكَلَّمُوْنَ
اِلَّا مَنْ اَذِنَ لَهُ الرَّحْمٰنُ
وَقَالَ صَوَابًا ۝

٣٩- ذٰلِكَ الْيَوْمُ الْحَقُّ ۚ
فَمَنْ شَآءَ اتَّخَذَ اِلٰى رَبِّهٖ مَاٰبًا ۝

٤٠- اِنَّآ اَنْذَرْنٰكُمْ عَذَابًا قَرِيْبًا ۖ
يَّوْمَ يَنْظُرُ الْمَرْءُ مَا قَدَّمَتْ يَدٰهُ
وَيَقُوْلُ الْكٰفِرُ
يٰلَيْتَنِيْ كُنْتُ تُرٰبًا ۝

No 79 SURAH NAAZI-'AAT (81)

(ANGELS WHO TEAR OUT SOULS)

MAKKI, RUKUS 2, AYATS 46, WORDS 181, LETTERS 791

IN THE NAME OF ALLAH, MOST GRACIOUS, MOST MERCIFUL.

1 I (ALLAH) swear by those (Angels) who dive and tear out the souls of the wicked people mercilessly.

2 And I (ALLAH) swear by those (Angels) who gently draw out the souls (of the righteous).

3 And I (ALLAH) swear by those (Angels) who glide along swiftly across the heavens.

4 And I (ALLAH) swear by those (Angels) who try to out pace each other in carrying out the Commands of ALLAH.

5 Then according to the Commands of ALLAH, they direct the affairs of the world.

6 On that Day of Judgement the earth will be shaken convulsively.

7 And would tremble by repeated convulsions.

8 On that Day hearts will pound due to fear.

नं॰ 79 सूरह् नाज़ि-आत (81)

(फ़रिश्ते जो रूह क़ब्ज़ करते हैं)

मक्की, रुकूअ़ 2, आयात 46, लफ़्ज़ 181, हुरूफ़ 791

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है.

1 क़सम है उन (फ़रिश्तों) की जो (काफ़िरों की) रूह घुस कर सख़्ती से खींच बाहर निकालते हैं

2 और क़सम है उन (फ़रिश्तों) की जो आराम से (परहेज़गारों की) रूह निकल लेते हैं.

3 और उनकी क़सम (यानी फ़रिश्तों की) जो कायनात में तेज़ रफ़्तारी से दौड़ते फिरते हैं.

4 और उन फ़रिश्तों (की क़सम) जो हुक्म बजा लाने में एक दूसरे से बाज़ी ले जाना चाहते हैं.

5 और अल्लाह के हुक्म के मुताबिक दुन्या के कामों का बंदोबस्त करते हैं.

6 उस क़ियामत के रोज़ ज़ल्ज़ले का झटका ज़मीन को हिला डालेगा.

7 और फिर झटके के बाद झटके.

8 उस दिन दिल खौफ़ से कांप रहे होंगे.

नं. 79 सूरह् नाज़िआत (81)

मक्की, रुकूअ़ 2, आयात 46,
लफ़्ज़ 181, हुरूफ़ 791

बिस्मिल्लाहिर् रह्मानिर् रहीम○

1 वन् नाज़िआति ग़र्क़ा ○

2 वन् नाशिआति नश्ता ○

3 वस् साबिहाति सब्हा ○

4 फ़स् साबिक़ाति सब्क़ा ○

5 फ़ल् मुदब्बिराति अम्रा ○

6 यौमा तर्जुफ़ुर् राजिफ़ह् ○

7 तत्बअुहा र्रादिफ़ह् ○

8 क़ुलूबुंय् यौमइज़िंव् वाजिफ़ह् ○

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

١- وَالنّٰزِعٰتِ غَرْقًا ۙ

٢- وَّالنّٰشِطٰتِ نَشْطًا ۙ

٣- وَّالسّٰبِحٰتِ سَبْحًا ۙ

٤- فَالسّٰبِقٰتِ سَبْقًا ۙ

٥- فَالْمُدَبِّرٰتِ اَمْرًا ۘ

٦- يَوْمَ تَرْجُفُ الرَّاجِفَةُ ۙ

٧- تَتْبَعُهَا الرَّادِفَةُ ۙ

٨- قُلُوْبٌ يَّوْمَئِذٍ وَّاجِفَةٌ ۙ

9 And their eyes will look low down with humiliation.
10 The Disbelievers say - "Are we really going to be restored to our former state again?"

11 "Even when we are reduced to rotten bones."
12 "In that case such a return would be harmful for us"

13 But it will be only one single mighty blast.

14 And they all will rush to gather in the field for judgement.

15 (O Messenger!) Has the story of Musa ('Alle His Salaam) reached you?
16 When his (i.e. of Musa 'Alle His Salaam RABB had called him in the Holy valley of Tuwa.
17 And had commanded him to go to Phurcah as he had indeed become a tyrant rebel.
18 And tell him: "Would you like to grow in virtue?"

19 "Then I (i.e. Musa 'A.S.) will guide to your RABB, that you may come to fear HIM."

9 और उनकी आंखे मारे निदामत के झुक रही होंगी.
10 काफ़िर लोग कहते हैं - "क्या हम फिर दुबारा अपनी पहली हालत में लौटाये जायेंगे ?"

11 "और जब के हम बोसीदा हड्डियां हो जायेंगे ?"
12 "और अगर ऐसा हुआ तो ये लौटना तो हमारे लिये बड़े नुक़सान की बात होगी"

13 वो तो सिर्फ़ एक ही ज़बरदस्त धमाका होगा.

14 और वो सब एक दम हशर के मैदान में जमा हो जायेंगे.

15 (ऐ पैग़म्बर !) क्या आप तक मूसा (अलै हिस सलाम) का क़िस्सा पहुंचा है?

16 जब उनके (मूसा अ० स० के) रब ने उन्हें तुवा की पाक वादी वाले मैदान में पुकारा था.

17 और उन्हें हुक्म दिया था के वो फ़िरऔन के पास जायें क्योंके उसने बहुत सर उठा रखा है.
18 और उससे कहो के: "क्या तुझे ख़्वाहिश है के तू दुरुस्त और पाक हो जाये ?"
19 "तो मैं तेरी रहनुमाई रब की तरफ़ करूं ताके तुझमें उसका ख़ौफ़ पैदा हो जाये !"

9 अब्सारुहा ख़ाशिअ़ह् ○	٩- أَبْصَارُهَا خَاشِعَةٌ ○
10 यक़ूलूना अ इन्ना ल मर्दूदूना फ़िल् हाफ़िरह् ○	١٠- يَقُولُونَ أَإِنَّا لَمَرْدُودُونَ فِي الْحَافِرَةِ ○
11 अ इज़ा कुन्ना इ़ज़ामन् नख़िरह् ○	١١- أَإِذَا كُنَّا عِظَامًا نَّخِرَةً ○
12 क़ालू तिल्का इज़न् कर्रतुन् ख़ासिरह् ○	١٢- قَالُوا تِلْكَ إِذًا كَرَّةٌ خَاسِرَةٌ ○
13 फ़ इन्नमा हिया ज़ज्रतुन् वाहिदह् ○	١٣- فَإِنَّمَا هِيَ زَجْرَةٌ وَاحِدَةٌ ○
14 फ़ इज़ा हुम् बिस्साहिरह् ○	١٤- فَإِذَا هُم بِالسَّاهِرَةِ ○
15 हल् अताक़ हदीसु मूसा ○	١٥- هَلْ أَتَاكَ حَدِيثُ مُوسَىٰ ○
16 इज़् नादाहु रब्बुहू बिल् वादिल् मुक़द्दसि तुवा ○	١٦- إِذْ نَادَاهُ رَبُّهُ بِالْوَادِ الْمُقَدَّسِ طُوًى ○
17 इज़्हब इला फ़िरऊ़ौना इन्नहू तग़ा ○	١٧- اذْهَبْ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ إِنَّهُ طَغَىٰ ○
18 फ़ क़ुल् हल् लाका इलाअ अन् तज़क्का ○	١٨- فَقُلْ هَل لَّكَ إِلَىٰ أَن تَزَكَّىٰ ○
19 व अह्दि याका इला रब्बिका फ़ तख़्शा ○	١٩- وَأَهْدِيَكَ إِلَىٰ رَبِّكَ فَتَخْشَىٰ ○

20 So he (i.e. Musa 'Allehis-Salaam) showed him (Pharoah) the great Sign (of a rod).

21 But Pharoah rejected it and refused to accept the guidance.

22 Then he went back hastily and started striving hard (against Musa 'Allehis Salam).

23 Then he summoned his councillors and made a pro--clamation in a loud voice.

24 Then he said - " I (alone) am your RABB !"

25 But ALLAH punished him (and made him an example of him in the Hereafter and in this life also).

26 Truly there is a lesson in this for him who fears ALLAH.

Ruku'a (Section) 2

27 Are you more difficult to create or the heavens (that HE has created.

28 HE raised it high and gave it order and perfection.

29 Then HE gave darkness to its night and sunshine to its day.

20 तो मूसा (अलैहिस् सलाम) ने उसे (असा की याने लाठी की) बड़ी निशानी दिखाई.

21 मगर फ़िरऔन ने उसे झुठलाया और बात ना मानी.

22 फिर वो वापस गया और (मूसा अलैहिस् सलाम के ख़िलाफ़ तदबीरें करने लगा.

23 उसने लोगों को इकठा किया और बा आवाज़ तक़रीर की.

24 और उसने कहा - " मैं ही तुम्हारा सब से बड़ा मालिक हूं.

25 लेकिन अल्लाह ने उसे आख़िरत और दुनिया (दोंनो में) सज़ा के लिये धर पकड़ा.

26 बेशक़ जो अल्लाह से डरता है उसके लिये इस क़िस्से में एक सबक़ है.

रुकूअ् (सैक्शन) 2

27 क्या तुम्हारा (दुबारा) बनाना मुश्किल है या आसमान का जो अल्लाह ने बनाया है ?

28 अल्लाह ने उसकी छत को ऊंचा किया और उसमें तवाज़ुन क़ायम किया.

29 फिर उसकी रात में अंधेरा बनाया और उसके दिन में धूप से उजाला किया.

20 फ़ अरा हुल् आया तल्
कुब्रा ز ط ○

٢٠- فَأَرَىٰهُ الْآيَةَ الْكُبْرَىٰ ۝

21 फ़ कज्जबा व असा ز ط ○

٢١- فَكَذَّبَ وَعَصَىٰ ۝

22 सुम्मा अद् बारा यस्आ ز ط ○

٢٢- ثُمَّ أَدْبَرَ يَسْعَىٰ ۝

23 फ़ हशारा फ़ नादा ز ط ○

٢٣- فَحَشَرَ فَنَادَىٰ ۝

24 फ़ क़ाला आना रब्बु कुमुल्
अअ्लाा ز ط ○

٢٤- فَقَالَ أَنَا رَبُّكُمُ الْأَعْلَىٰ ۝

25 फ़ अख़ाज़ा हुल् लाहु नकाल्
आख़िर रति वल् उ़ूला ک ○

٢٥- فَأَخَذَهُ اللَّهُ
نَكَالَ الْآخِرَةِ وَالْأُولَىٰ ۝

26 इन्ना फ़ी ज़ालिका ल ज़िब्रा
तल् लि मंय् यख़्शा ک ع ○

٢٦- إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَعِبْرَةً
لِمَنْ يَخْشَىٰ ۝

रुकूअ् (सैक्शन) 2

27 अ अन् तुम् अशद्दु ख़ल्क़न्
अमिस् समाअ् ک बनाहा ○

٢٧- ءَأَنتُمْ أَشَدُّ خَلْقًا
أَمِ السَّمَاءُ ۚ بَنَاهَا ۝

28 रफ़ाअ़ा सम् कहा फ़ सव् वाहा ○

٢٨- رَفَعَ سَمْكَهَا فَسَوَّاهَا ۝

29 व अग़् ताशा लै लहा व अख़्
राजा ज़ुहाहा ○

٢٩- وَأَغْطَشَ لَيْلَهَا
وَأَخْرَجَ ضُحَاهَا ۝

30 And thereafter HE spread out the earth.

31 It is HE WHO brought out its water and its pastures from it

32 And firmly fixed weighty mountains.

33 For you and for your cattle as a convenience.

34 So, when the Great Calamity (of the Day of Judgement) will come.

35 The Day when man shall call to mind all that he had done.

36 And Hell Fire shall be placed in full view for all to see.

37 Then for him who had rebelled.

38 And had preferred the life of this world.

39 Surely his abode will be Hell.

40 But he who had feared the standing before his RABB and restrained his soul from vain desires.

41 Surely his abode will be in Paradise.

42 (O Messenger! Muhammad Mustafa Sal Lal Laahu 'Allihi Wa Sallam) They ask

30 और उसके बाद ज़मीन को पैदा किया.

31 उसी अल्लाह ने इसमें से इसका पानी और इसका चारा निकाला.

32 और उस पर पहाड़ों का मज़बूती से बोझ रख दिया.

33 तुम्हारे और तुम्हारे चौपायों के फ़ायदे के लिये.

34 तो जब (क़ियामत की) बड़ी आफ़त आ पड़ेगी.

35 उस दिन इंसान को (अपनी ज़िंदगी में) जो कुछ भी किया है वो उसे याद आयेगा.

36 और दोज़ख़ की आग सबके देखने को सामने निकाल कर रख दी जायेगी.

37 तो जिसने सरकशी की थी.

38 और जिसने दुनिया की ज़िंदगी को ही सब कुछ समझ रखा था.

39 तो उसका ठिकाना दोज़ख़ ही होगा.

40 लेकिन जो अपने रब के सामने खड़े होने की घड़ी से डरता रहा और अपने नफ़्स को बेहूदा ख़्वाहिशि-यातों से रोकता रहा.

41 तो बेशक़ उसका ठिकाना बहिश्त में होगा.

42 (ऐ पैग़म्बर! मुहम्मद मुस्तफ़ा सल् लल् लाहु अलैहि व सल्लम) ये लोग आपसे क़ियामत की घड़ी के

30 वल् अर्ज़ा बअ्दा ज़ालिका दहाहा ۵ ○

٣٠- وَالْأَرْضَ بَعْدَ ذٰلِكَ دَحٰهَا ۝

31 अख़् राजा मिन्हा माअहा व मर् आहा ۵ ○

٣١- أَخْرَجَ مِنْهَا مَآءَهَا وَمَرْعٰهَا ۝

32 वल् जिबाला अर् साहा ۵ ○

٣٢- وَالْجِبَالَ أَرْسٰهَا ۝

33 मता अ़ल् लकुम् वलि अन् आमि कुम् ۵ ○

٣٣- مَتَاعًا لَّكُمْ وَلِأَنْعَامِكُمْ ۝

34 फ़ इज़ा जाअ अतित् त़ाम्मा तुल् कुब्रा ۵ ○

٣٤- فَإِذَا جَآءَتِ الطَّآمَّةُ الْكُبْرٰى ۝

35 यौमा यता ज़क्का रुल् इन्सानु मा सआ ۵ ○

٣٥- يَوْمَ يَتَذَكَّرُ الْإِنْسَانُ مَا سَعٰى ۝

36 व बुर्रि ज़तिल् जहीमु लि मंय् यरा ○

٣٦- وَبُرِّزَتِ الْجَحِيْمُ لِمَنْ يَّرٰى ○

37 फ़ अम्मा मन् त़गा ۵ ○

٣٧- فَأَمَّا مَنْ طَغٰى ۝

38 व आसा रल् ह़याता द्दुन्या ۵ ○

٣٨- وَآثَرَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا ۝

39 फ़ इन्नल् जहीमा हियल् मअ्वा ۵ ○

٣٩- فَإِنَّ الْجَحِيْمَ هِيَ الْمَأْوٰى ۝

40 व अम्मा मन् ख़ाफ़ा मक़ामा रब्बिही व नहन् नफ़्सा अ़निल् हवा ۵ ○

٤٠- وَأَمَّا مَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ وَنَهَى النَّفْسَ عَنِ الْهَوٰى ۝

41 फ़ इन्नल् जन्नता हियल् मअ्वा ۵ ○

٤١- فَإِنَّ الْجَنَّةَ هِيَ الْمَأْوٰى ۝

42 यस् अलू नाका अ़निस्साअ़ति अय्याना मुर् साहा ۵ ○

٤٢- يَسْئَلُوْنَكَ عَنِ السَّاعَةِ أَيَّانَ مُرْسٰهَا ۝

you about the coming of the Hour: "When would the Hour (of Dooms Day) come?"

43 What have you to do with its declaration?

44 The time limit fixed for that Event is known to your RABB alone.

45 You (O Messenger! Muhammad Mustafa Sal Lal Laahu 'Allihi Wa Sallam) are only a warner to him who fears it.

46 The Day they will see it, it would seem to them as if they had stayed in the world but for only an evening or at best till the following morning.

बारे में पूछते हैं के: वो क़ियामत कब आयेगी?"

43 तुमको उसका वक़्त बताने से क्या ग़रज़?

44 उस वाक़ेज़ की घड़ी का ज़िल्म तुम्हारे रब ही को मालूम है.

45 आपका (ऐ पैग़म्बर! मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम्) काम तो सिर्फ़ उसको ख़बरदार कर देना है जो उससे डरता हो.

46 जब वो उसको देखेंगे तो उन्हें ऐसा मालूम होगा जैसे के वो दुनिया में सिर्फ़ एक ही शाम रहे हैं या ज़्यादा से ज़्यादा उसकी सुबह होने तक.

NO 80 SURAH 'ABASA (24)
(HE FROWNED)

MAKKI, RUKU 1, AYATS 42, WORDS 113 LETTERS 553

IN THE NAME OF ALLAH, MOST GRACIOUS, MOST MERCIFUL.

1 He (i.e. Muhammad Mustafa Sal Lal Laahu Allihi Wa Sallam) frowned and turned away.

2 Because a blind man (Abdullah Bin Maktoom) came (and interrupted) him (while he

नं० 80 सूरह् आबासा (२४)
(आपने तेवर चढ़ाये)

मक्की, रुकूअ़ 1, आयात 42, लफ़्ज़ 113 हुरूफ़ 553

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 उन्होंने (यानी मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम् ने) तेवर चढ़ाये और बेरुख़ी से मुंह फेर लिया.

2 के उनके पास एक अंधा शख़्स (अब्दुल्ला बिन् मक़्तूम) आया और उनको बात करते में अपनी तरफ़

43 फ़ीमा अन्ता मिन् ज़िक्राहा ۝

٤٣- فِيمَ أَنتَ مِن ذِكْرَىٰهَا ۝

44 इला रब्बिका मुन्ता हाहा ۝

٤٤- إِلَىٰ رَبِّكَ مُنتَهَاهَا ۝

45 इन्नमा अन्ता मुन्ज़िरु मंय् यख़्शाहा ۝

٤٥- إِنَّمَا أَنتَ مُنذِرُ مَن يَخْشَاهَا ۝

46 क अन्नहुम् यौमा यरौ नहा लम् यल्बसू इल्ला आशिय्यातन् औ ज़ुहाहा ۝

٤٦- كَأَنَّهُمْ يَوْمَ يَرَوْنَهَا
لَمْ يَلْبَثُوا إِلَّا عَشِيَّةً
أَوْ ضُحَاهَا ۝

नं० 80 सूरातु आबासा (२४)

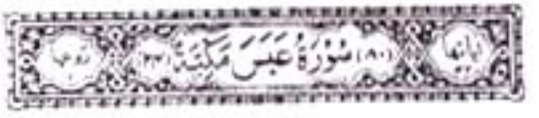

मक्की, रुकूअ़ 1, आयात 42, लफ़्ज़ 113
हरूफ़ 553

बिस्मिल्लाहिर् रह्मानिर् रहीम ۝

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

1 आबासा वाता वल्ला ۝

١- عَبَسَ وَتَوَلَّىٰ ۝

2 अन् जाआहुल् अअ़्मा ۝

٢- أَن جَاءَهُ الْأَعْمَىٰ ۝

was preaching.)

3 What made you think that the blind man would not have grown in spiritual virtue?

4 Or that he might have heeded to your admonition and thus your admonition would have profitted him.

5 But to him who regards himself - self sufficient and independent.

6 To him, you pay full attention!

7 Though it is no blame on you if he does not grow in spiritual virtue.

8 But for him who comes to you earnestly to seek goodness.

9 And has fear (of ALLAH in his heart)

10 To him, you are neglect--ful.

11 By no means you should have done it.

12 So whosoever wishes to accept it and adopt it, let him do so.

13 This Qur'aan is contained in the most honoured pages.

14 These pages are exalted in dignity and are kept pure -

मुतवज्जह् किया

3 आपको क्या मालूम के शायद वो (नाबीना शख़्स) आपकी तालीम से पूरी तरह संवर ना जाता.

4 और वो आपकी नसीहत को सुन्ता और इस तरह आपका समझाना उसके लिये फ़ायेदे मंद होता.

5 लेकिन जो (तकब्बुर में) बे परवाही करता है.

6 तो उसकी तरफ़ आप फ़िक्र से तवोज्जह देते हो.

7 हालांके अगर वो ना संवरे (और पाक ना हो) तो आप पर कोई इल्ज़ाम नहीं.

8 लेकिन जो आपके पास दीन की हिदायत के लिये दौड़ता हुआ आया है.

9 और जिसके दिल में अल्लाह का डर है.

10 तो उससे आप बे रुख़ी बरतते हैं.

11 आपको हरगिज़ ऐसा नहीं करना चाहिये था. क़ुरआन तो (सब के लिये) एक नसीहत है.

12 तो जिसका भी जी चाहे इसे क़ुबूल कर ले.

13 ये क़ुरआन क़ाबिले अदब वरकों में लिखा हुआ है.

14 ये (वरक़) ऊंचे मुक़ाम पर रखे हुए हैं और पाक हैं.

3 वमा युद् रीका ल अ़ल्लहू यज़् ज़क्का ॥ ०	٣-وَمَا يُدْرِيكَ لَعَلَّهُ يَزَّكَّىٰ ۝
4 औ यज़् ज़क्कर, फ़ तन् फ़ाआ हुज़् ज़िक्रा ऽ ०	٤-أَوْ يَذَّكَّرُ فَتَنفَعَهُ الذِّكْرَىٰ ۝
5 अम्मा मनिस् तग़्ना ॥ ०	٥-أَمَّا مَنِ اسْتَغْنَىٰ ۝
6 फ़ अन्ता लहू त स़द्दा ऽ ०	٦-فَأَنتَ لَهُ تَصَدَّىٰ ۝
7 वमा अ़लैका अल्ला यज़् ज़क्का ऽ०	٧-وَمَا عَلَيْكَ أَلَّا يَزَّكَّىٰ ۝
8 व अम्मा मन् जाआ जाका यस्ज़ा ॥ ०	٨-وَأَمَّا مَن جَاءَكَ يَسْعَىٰ ۝
9 व हुवा यख़्शा ॥ ०	٩-وَهُوَ يَخْشَىٰ ۝
10 फ़ अन्ता अ़न्हु त लह्हा ८ ०	١٠-فَأَنتَ عَنْهُ تَلَهَّىٰ ۝
11 कल्ला इन्नहा तज़् किरह् ८ ०	١١-كَلَّا إِنَّهَا تَذْكِرَةٌ ۝
12 फ़ मन् शाआ जाकरह् ८ ०	١٢-فَمَن شَاءَ ذَكَرَهُ ۝
13 फ़ी सुहुफ़िम् मुकर्रमह् ॥ ०	١٣-فِي صُحُفٍ مُّكَرَّمَةٍ ۝
14 मरफ़ूअ़तिम् मुत़ह्हरह् ॥ ०	١٤-مَّرْفُوعَةٍ مُّطَهَّرَةٍ ۝

and only.

15 They are in the hands of such scribes.

16 (Who are) honourable, pious and just.

17 Man is accursed! How ungrateful is he?

18 From what stuff has HE created him?

19 From a drop of semen HE created him, then gave him proportion.

20 Then made his passage easy for him.

21 Then HE causes him to die and puts him in his grave.

22 Then, when it is HIS will, HE will raise him up again.

23 But no, he has not fulfilled what was enjoined on him (by ALLAH)

24 Then let man look at his food.

25 And it is WE who pour water in abundance.

26 Then split the earth open in fragments (ploughing for germination).

27 And produced the grain from it.

28 And produced grapes and nuitritious plants.

15 वो ऐसे लिखने वालों के हाथों में हैं-

16 जो मुअज़्ज़िज़ज़, नेक और सच्चे कातिब हैं.

17 इंसान पर लानत हो! वो कैसा ना शुक्रा है?

18 उसे अल्लाह ने किस चीज़ से बनाया है?

19 उसे उसने नुत्फ़े की एक बूंद से बनाया, फ़िर सही अंदाज़े से उसके मूं और दूसरे अज़्ज़ा वगैरह बनाये.

20 फ़िर उसके लिये रास्ता आसान कर दिया.

21 फ़िर वो उसको मौत देता है और क़ब्र में दफ़न कराता है.

22 फ़िर जब वो चाहेगा उसे दुबारा उठा कर खड़ा कर देगा.

23 कुछ नहीं, अल्लाह ने जो हुक्म उसे दिया था उसने उसे तामील नहीं किया.

24 तो फ़िर आदमी अपनी ख़ुराक़ को ही देखे.

25 और हम ही पानी को बरसाते हैं.

26 फ़िर हमने ज़मीन को चीरा फ़ाड़ा (हल चलाया).

27 फ़िर हम ही ने उसमें अनाज उगाया.

28 और अंगूर और हरी सब्ज़ियां उगाईं.

15 बि अैदी साफ़ा रह् ॥ ०	١٥-بِأَيْدِىْ سَفَرَةٍ ۝
16 किरा मिम् बारा रह् ऽ ०	١٦-كِرَامٍ بَرَرَةٍ ۝
17 क़ुति लल् इन्सानु मा अक् फ़रह् ऽ ०	١٧-قُتِلَ الْإِنْسَانُ مَآ أَكْفَرَهُ ۝
18 मिन् अय्य शैइन् ख़ाला क़ह् ऽ ०	١٨-مِنْ أَىِّ شَىْءٍ خَلَقَهُ ۝
19 मिन् नुत् फ़ह् ऽ ख़ाला क़हू फ़ क़द्दा रह् ॥ ०	١٩-مِنْ نُطْفَةٍ خَلَقَهُ فَقَدَّرَهُ ۝
20 सुम्मस् सबीला यस् सरह् ॥ ०	٢٠-ثُمَّ السَّبِيلَ يَسَّرَهُ ۝
21 सुम्मा अमा तहू फ़ अक़् बरह् ॥ ०	٢١-ثُمَّ أَمَاتَهُ فَأَقْبَرَهُ ۝
22 सुम्मा इजा शा आ अन् शरह् ऽ ०	٢٢-ثُمَّ إِذَا شَآءَ أَنْشَرَهُ ۝
23 कल्ला लम्मा यक़ज़ि मा आमा रह् ऽ ०	٢٣-كَلَّا لَمَّا يَقْضِ مَآ أَمَرَهُ ۝
24 फ़ल् यन् ज़ुरिल् इन् सानु इला तआ मिह् ॥ ०	٢٤-فَلْيَنْظُرِ الْإِنْسَانُ إِلَىٰ طَعَامِهِ ۝
25 अन्ना सबब् नल् मा आ सब्बा ०	٢٥-أَنَّا صَبَبْنَا الْمَآءَ صَبًّا ۝
26 सुम्मा शक़क़् नल् अर्ज़ा शक़्क़ा ॥ ०	٢٦-ثُمَّ شَقَقْنَا الْأَرْضَ شَقًّا ۝
27 फ़ अम् बत्ना फ़ीहा हब्बा ॥ ०	٢٧-فَأَنْبَتْنَا فِيهَا حَبًّا ۝
28 व ज़िना बंव् व क़ज़्बा ॥ ०	٢٨-وَعِنَبًا وَقَضْبًا ۝

29 And produced olives and dates.

30 And produced dense gardens with tall trees.

31 And produced fruits and fodder.

32 A provision for you and for your cattle.

33 At last, when the Great Calamity will come with a deafening blast.

34 That Day man will flee from his brother.

35 And from his mother and his father.

36 And from his wife and from his children.

37 That Day each man will have enough concern of his own to make him indifferent to all others.

38 Some faces that Day will be beaming with brightness.

39 Laughing and full of joy.

40 And other faces on that Day will have dust upon them.

41 Blackness will cover them.

42 Those will be the Disbelievers, the wicked.

29 और ज़ैतून और खजूरें उगाईं

30 और घने घने दरख़्तों से भरे बाग़ उगाये.

31 और मेवे और चारा उगाया.

32 तुम्हारे और तुम्हारे जानवरों के खाने के लिये.

33. फ़िर जिस दिन मुसीबत वाली क़ियामत, कान बहरे कर डालने वाले धमाके के साथ आयेगी.

34 उस दिन आदमी अपने भाई से दूर भागेगा.

35 और अपनी मां और अपने बाप से.

36 और अपनी बीवी और अपनी औलाद से.

37 उस दिन हर शख्स पर ऐसी मुसीबत आ पड़ेगी के अपने सिवा किसी और का होश नहीं होगा.

38 कुछ चेहरे उस दिन (लेकिन) चमक रहे होंगे.

39 (खुशी से) हंसते मुसकराते दमकते हुए.

40 और उस दिन कितने ही चेहरे होंगे जिन पर धूल पड़ी होगी.

41 उन पर स्याही छाई हुई होगी.

42 वो कुफ़्फ़ार होंगे, बद किरदार

29 व ज़ैतू नंव व नख़्लाा ५०

٢٩- وَزَيْتُونًا وَّنَخْلًا ۝

30 व ह़दाएा इक़ा ग़ुल्बा ५०

٣٠- وَحَدَآئِقَ غُلْبًا ۝

31 व फ़ाकिहतं व अब्बा ५०

٣١- وَّفَاكِهَةً وَّاَبًّا ۝

32 मता अ़ल लकुम् वलि अन्
आमि कुम् ५०

٣٢- مَّتَاعًا لَّكُمْ وَلِاَنْعَامِكُمْ ۝

33 फ़ इज़ा जाएा अतिस्
साएा स़ख़्ख़ह् ५०

٣٣- فَاِذَا جَآءَتِ الصَّآخَّةُ ۝

34 योमा य फ़िरुल् मरअु मिन्
अख़ीह ५०

٣٤- يَوْمَ يَفِرُّ الْمَرْءُ مِنْ اَخِيْهِ ۝

35 व उम्मि ही व अबीह ५०

٣٥- وَاُمِّهٖ وَاَبِيْهِ ۝

36 व साहि बतिही व बनीह ५०

٣٦- وَصَاحِبَتِهٖ وَبَنِيْهِ ۝

37 लि कुल्लिम् रि इम् मिन् हुम्
योमा इज़िन् शअ़् नुंय् युग़् नीह ५०

٣٧- لِكُلِّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ
يَوْمَئِذٍ شَاْنٌ يُّغْنِيْهِ ۝

38 वुजू हुंय् योमा इज़िम् मुस्
फ़िरह् ५०

٣٨- وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ مُّسْفِرَةٌ ۝

39 ज़ाहिका तुम् मुस् तब्
शिरह् ५०

٣٩- ضَاحِكَةٌ مُّسْتَبْشِرَةٌ ۝

40 व वुजू हुंय् योमा इज़िन्
अलैहा ग़ाबा रह् ५०

٤٠- وَوُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ عَلَيْهَا غَبَرَةٌ ۝

41 तर् हुक़ हा क़ाता रह् ५०

٤١- تَرْهَقُهَا قَتَرَةٌ ۝

42 उलाएा इक़ा हुमुल् काफ़ारा तुल्
फ़ाजा रह् ५०

٤٢- اُولٰٓئِكَ هُمُ الْكَفَرَةُ الْفَجَرَةُ ۝

No 81 SURAH TAKWEER (7)

(THE FOLDING UP)

MAKKI, RUKU 1, AYATS 29, WORDS 104, LETTERS 436

IN THE NAME OF ALLAH, MOST GRACIOUS, MOST MERCIFUL.

1 When the sun would be folded up
2 When the stars would loose lustre and would fall down.
3 When the mountains would fly and scatter away.
4 When the female camels, with ten months of pregnancy, will be abandoned.
5 When the wild beasts will get herded together (out of scare).
6 When the oceans will surge and swell like boiling water.
7 When the souls would be gathered together to their respective bodies.
8 And when the girl child, that was buried alive, would be asked.
9 That for what crime she was put to death?

नं. 81 सूरह् तक्वीर (7)

(सब कुछ लपेट दिया जायेगा)

मक्की, रुकूअ् 1, आयात 29, लफ़्ज़ 104, हुरूफ़ 436

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 जब सूरज रोशनी खो देगा.

2 जब सितारे बे रोशन होकर गिर जायेंगे.

3 जब पहाड़ चलाये और हिलाये जायेंगे.

4 जब दस महीनों की गिबाबन ऊंटनियां अपने हाल पर छूटी फिरेंगी.

5 जब जंगली वहशी जानवर मारे खौफ़ के सिमट कर इकट्ठे हो जायेंगे.

6 जब समुन्दर जोश से उबल पड़ेंगे.

7 जब इंसान की रूहों को उनके जिस्मों से दुबारा मिला दिया जायेगा.

8 और जब उस लड़की से, जो ज़िंदा दफ़्न कर दी गई थी, पूछा जायेगा.

9 के वो किस क़ुसूर के बदले मार डाली गई थी?

नं॰ 81 सूरा तुत् तक्वीर (7)

मक्की, रुकूअ 1, आयात 29,
लफ़्ज़ 104, हुरूफ़ 436

बिस् मिल्लाहि र्रहमानि र्रहीम ○

1 इज़श् शम्सु कुव्विर रत् ⅊○

2 व इज़न् नुजू मुन् कादरत् ⅊○

3 व इज़ल् जिबालु सुय्यिरत् ⅊○

4 व इज़ल् ज़िशारु अुत्तिलत् ⅊○

5. व इज़ल् वुहूशु हुशिरत् ⅊○

6 व इज़ल् बिहारु सुज्जिरत् ⅊○

7 व इज़न् नुफ़ूसु ज़ुव्विजत् ⅊○

8 व इज़ल् मौउ़ूदतु सुइलत् ⅊○

9 बि अय्यि ज़म्बिन् क़ुतिलत् ⅊○

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

١- اِذَا الشَّمْسُ كُوِّرَتْ ۝

٢- وَاِذَا النُّجُوْمُ انْكَدَرَتْ ۝

٣- وَاِذَا الْجِبَالُ سُيِّرَتْ ۝

٤- وَاِذَا الْعِشَارُ عُطِّلَتْ ۝

٥- وَاِذَا الْوُحُوْشُ حُشِرَتْ ۝

٦- وَاِذَا الْبِحَارُ سُجِّرَتْ ۝

٧- وَاِذَا النُّفُوْسُ زُوِّجَتْ ۝

٨- وَاِذَا الْمَوْءٗدَةُ سُئِلَتْ ۝

٩- بِاَيِّ ذَنْۢبٍ قُتِلَتْ ۝

10 And when the scrolls (of) deeds) are laid open.

11 And when the curtain is drawn back from the skies (and the upper view is visible).

12 When the Hell is set ablaze with fire.

13 And when the Paradise is brought near.

14 Then every soul will know what deeds he has brought forward (for the Day of Judgement).

15 I (i.e. ALLAH) swear by the stars that begin to recede gradually.

16 And those (stars) which disappear while they are on the move.

17 And I (i.e. ALLAH) swear by the night when it begins to come to an end.

18 And I (i.e. ALLAH) swear by the dawn as it breaks and pushes the night away.

19 That this Qur'aan is indeed the word of ALLAH, brought down by an Honourable Messenger (i.e. Angel Jibreel 'Allehis Salam).

20 He is endued with power and holds high status with the RABB,

10 और जब (सबके) नामाए आमाल खोल कर सामने रख दिये जायेंगे.

11 और जब आसमान का परदा हटा दिया जायेगा (और ऊपर का नज़ारा दिखाई देने लगेगा).

12 जब दोज़ख़ को आग से भड़काया जायेगा.

13 और जब जन्नत क़रीब ले आई जायेगी.

14 तब हर शख़्स को मालूम हो जायेगा के वो क्या आमाल आख़िरत के लिये लेकर आया है.

15 हमको (यानी अल्लाह को) उन सितारों की क़सम जो पीछे हटने लगते हैं

16 और (उन सितारों की) जो चलते चलते ग़ायब हो जाते हैं.

17 और हमको (यानी अल्लाह को) रात की क़सम जब वो ख़तम होने को हो.

18 और हमको (यानी अल्लाह को) सुबह सादिक़ की क़सम जब वो रात के अंधयारे को फ़ाड़ कर उसकी पौ फ़टने को हो.

19 के ये क़ुरआन बेशक़ अल्लाह का कलाम है, जिसे एक मुअज़्ज़िज़ फ़रिश्ते (यानी जिबरील अलै हिस् सलाम) ने पहुंचाया है.

20 जो क़ूवत वाले हैं और अल्लाह के नज़दीक़ उनका दरजा ऊंचा है.

10 व इज़स् सुहुफ़ु नुशि रत् ॥०	١٠-وَإِذَا الصُّحُفُ نُشِرَتْ ۝
11 व इज़स् समाअु कुशि त़त् ॥०	١١-وَإِذَا السَّمَآءُ كُشِطَتْ ۝
12 व इज़ल् जहीमु सुइ्ज़िर रत् ॥०	١٢-وَإِذَا الْجَحِيمُ سُعِّرَتْ ۝
13 व इज़ल् जन्नतु उज़्लिफ़त् ॥०	١٣-وَإِذَا الْجَنَّةُ أُزْلِفَتْ ۝
14 अ़लि मत् नफ़्सुम्मा अह्ज़रत् ॥०	١٤-عَلِمَتْ نَفْسٌ مَّآ أَحْضَرَتْ ۝
15 फ़लाअु उक़्सिमु बिल् ख़ुन्नस् ॥०	١٥-فَلَآ أُقْسِمُ بِالْخُنَّسِ ۝
16 अल् जवा रिल् कुन्नस् ॥०	١٦-الْجَوَارِ الْكُنَّسِ ۝
17 वल् लैलि इज़ा अ़स् अ़स् ॥०	١٧-وَالَّيْلِ إِذَا عَسْعَسَ ۝
18 वस् सुब्हि इज़ा तनफ़्फ़स् ॥०	١٨-وَالصُّبْحِ إِذَا تَنَفَّسَ ۝
19 इन्नहू ल क़ौलु रसूलिन् करीम ॥०	١٩-إِنَّهُ لَقَوْلُ رَسُولٍ كَرِيمٍ ۝
20 ज़ी क़ुव्वा तिन् इ़न्दा ज़िल् अ़र्शि मकीन ॥०	٢٠-ذِي قُوَّةٍ عِندَ ذِي الْعَرْشِ مَكِينٍ ۝

the Master of the throne.

21 He is the leader and the trustworthy too.

22 And (O people of Meccu!) your companion (i.e. the Messenger) is not mad.

23 And (the Messenger) has certainly seen him (i.e. Jibreel 'Allehis Salam) on the clear horizon.

24 And (the Messenger) also does not hold back the knowledge of the unseen (to the people).

25 And this (Qur'aan) is not the word of an accursed Shaitaan.

26 Then why (you people) are going astray?

27 Containly this (Qur'aan) is a message to all the peoples of the world.

28 And specially for him amongst you who desires to walk on a straight path.

29 But you can not desire (yourselves), unless ALLAH, the RABB of all the worlds desires.

21 वो सरदार हैं और अमानत दार भी (के वही को सही सही पहुंचा देते हैं)

22 और (ऐ मक्का के लोगो!) तुम्हारे साथी (मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) मजनून (यानी दीवाने नहीं हैं.

23 और इन्होंने (यानी रसूल ने) उन्हें (यानी जिबरील अलैहिस्सलाम को असली सूरत में आसमान के किनारे पर देखा भी है.

24 और ये (यानी अल्लाह के रसूल) ग़ैब की (यानी वही से बतलाई हुई) बातों को लोगों तक पहुंचाने में भी कंजूसी (कमी) करने वाले नहीं हैं.

25 और ये क़ुरआन किसी शैतान मरदूद की कही हुई बात नहीं है.

26 तो तुम (लोग) कहां बहके चले जा रहे हो?

27 बस ये (क़ुरआन) तो सारे दुनिया जहान वालों के लिये एक नसीहत नामा है.

28 और ख़ास तौर पर तुममें से ऐसे शख़्स के लिये जो सीधी राह पर चलना चाहे.

29 और तुम्हारे चाहने से कुछ नहीं होगा जब तक के अल्लाह रब्बुल आलामीन ना चाहे.

1 मुत्ता ज़िन् सम्मा अमीन ٥	٢١. مُطَاعٍ ثَمَّ اَمِيْنٍ ٥
2 वमा साहिबु कुम् बि मज़्नून ٥	٢٢. وَمَا صَاحِبُكُمْ بِمَجْنُوْنٍ ٥
3 व लक़द् रआ हु बिल् उफ़ु क़िल् मुबीन ٥	٢٣. وَلَقَدْ رَاٰهُ بِالْاُفُقِ الْمُبِيْنِ ٥
4 वमा हुवा अलल् ग़ैबि बि ज़नीन ٥	٢٤. وَمَا هُوَ عَلَى الْغَيْبِ بِضَنِيْنٍ ٥
5 वमा हुवा बि क़ौलि शैत़ा निर् रजीम ٥	٢٥. وَمَا هُوَ بِقَوْلِ شَيْطٰنٍ رَّجِيْمٍ ٥
6 फ़ अैना तज़् हबून ٥	٢٦. فَاَيْنَ تَذْهَبُوْنَ ٥
7 इन् हुवा इल्ला ज़िक्र रल् लिल् आ़ला मीन ٥	٢٧. اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعٰلَمِيْنَ ٥
8 लि मन् शाआ़ मिन् कुम् अंय् यस्त़ा क़ीम ٥	٢٨. لِمَنْ شَآءَ مِنْكُمْ اَنْ يَّسْتَقِيْمَ ٥
9 वमा तशाऊ ऊना इल्लाअ अंय् यशाअ अल्लाहु रब्बुल् आ़ला मीन ٥	٢٩. وَمَا تَشَآءُوْنَ اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ٥

No 82 SURAH INFIṬAAR (82)

(THE SPLITTING APART OF THE SKY)

MAKKI, RUKU 1, AYATS 19, WORDS 80, LETTERS 334

IN THE NAME OF ALLAH, MOST GRACIOUS, MOST MERCIFUL.

1 When the sky is split asunder.
2 When the stars are scattered.
3 When the oceans would surge and would begin to overflow.
4 When the graves would be turned upside down.
5 Then each soul will know what it had sent forward and what it has left behind in the world.

6 O man! What has beguiled you from your RABB, the Most Beneficent.

7 WHO created you, then fashioned you in symmetry and then gave you right proportion.
8 HE shapes you into any form HE likes.

नं. 82 सूरह इन् फ़ितार (82)

(आसमान का फ़ट जाना)

मक्की, रुकूअ़ 1, आयात 19
लफ़्ज़ 80, हुरूफ़ 334

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहमवाला है.

1 जब आसमान फ़ट पड़ेगा.

2 जब सितारे टूट कर बिखर जायेंगे.
3 जब समुन्दर उबल कर सैलाब की तरह बह पड़ेंगे.

4 और जब क़बरें उखाड़ दी जायेंगी (यानी मुरदे निकल खड़े होंगे)
5 तब इंसान जान लेगा के उसने आगे (आख़िरत के लिये) क्या कुछ भेजा है - और उसने दुनिया में क्या (माल ओ दौलत) छोड़ा है.

6 ऐ इंसान तुझको किस चीज़ने अपने बहुत करम करने वाले रब की तरफ़ से धोके में डाल रखा है.

7 जिसने तुझको बनाया, फिर तेरे हाथ पैरों को ठीक ठीक बनाया और फिर तुझको एक मुकम्मिल डौल का इंसान बनाया.
8 और जिस सूरत में चाहा तुझको जोड़ कर तैय्यार कर दिया.

न॰82 सूरह् इन्फ़ितार (82)

सूرة الانفطار مكية ٨٢

मक्की, रूकूअ़ 1, आयात 19
लफ़्ज़ 80, हुरूफ़ 334

बिस्मिल्लाहिर् रह्मानिर् रहीम०

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

1 इज़स् समाउन् फ़ात़रत् ॥०

١- اِذَا السَّمَآءُ انْفَطَرَتْ ۙ

2 व इज़ल् कवाकिबुन् तान्सरत् ॥०

٢- وَ اِذَا الْكَوَاكِبُ انْتَثَرَتْ ۙ

3 व इज़ल् बिह़ारु फ़ुज्जिरत् ॥०

٣- وَ اِذَا الْبِحَارُ فُجِّرَتْ ۙ

4 व इज़ल् क़ुबूरु बुअ़्सिरत् ॥०

٤- وَ اِذَا الْقُبُوْرُ بُعْثِرَتْ ۙ

5 अ़लिमत् नफ़्सुम् मा क़द्दमत् व अख़्ख़रत् ॥०

٥- عَلِمَتْ نَفْسٌ مَّا قَدَّمَتْ
وَ اَخَّرَتْ ۙ

6 याअय्युहल् इन्सानु मा ग़र्रका बिरब्बिकल् करीम ॥०

٦- يٰۤاَيُّهَا الْاِنْسَانُ
مَا غَرَّكَ بِرَبِّكَ الْكَرِيْمِ ۙ

7 अल्लज़ी ख़लाक़ाका फ़सव्वाका फ़अ़दलक ॥०

٧- الَّذِيْ خَلَقَكَ
فَسَوّٰىكَ فَعَدَلَكَ ۙ

8 फ़ी अय्यि सूरतिम् मा शाअ़ रक्कबक ॥०

٨- فِيْۤ اَيِّ صُوْرَةٍ مَّا شَآءَ رَكَّبَكَ ۙ

9 No, but even then they deny the Day of Judgement.

10 Though there are guardian (angels) appointed over you.

11 Kind and honourable writing down your deeds.

12 Who know all – whatever you do.

13 As for the righteous, they will be in heaven well pleased.

14 And the wicked will surely be in Hell.

15 They will burn in it on the Day of Judgement.

16 And will not be removed from there.

17 And how could you comprehend what the Day of Judgement is?

18 Again, how then could you comprehend what the Day of Judgement is?

19 The Day no soul shall have any power for another soul. The absolute command on that Day will be wholly with ALLAH.

ONE FOURTH

9 मगर हैरत है! तुम फ़िर भी जज़ा और सज़ा (यानी क़ियामत) के दिन को झुठलाते हो.

10 हालांके तुम पर निगरां (फ़रिश्ते) मुक़र्रर हैं.

11 बुलंद मरतबा (फ़रिश्ते) जो तुम्हारी हर बात को लिखते जाते हैं.

12 और जो भी तुम करते हो वो सब जानते हैं.

13 और जो नेक परहेज़ गार होंगे, बेशक़ वो जन्नत के बाग़ों में मज़े से होंगे.

14 और बदकिरदार लोग बेशक़ दोज़ख़ में होंगे.

15 और क़ियामत के दिन वो उसमें जलाये जायेंगे.

16 और वो इससे निकल कर कहीं ग़ायब (या छिप) नहीं सकेंगे.

17 और तुमको क्या मालूम के रोज़े जज़ा (यानी आख़िरत या इंसाफ़ का दिन क्या चीज़ है?

18 और हम फ़िर कहते हैं के तुमको कुछ ख़बर है के रोज़े जज़ा क्या चीज़ है?

19 उस दिन किसी शख़्स का किसी दूसरे के फ़ायदे के लिये कोई बस ना चलेगा. उस दिन सारी हुकूमत अल्लाह ही के हाथ में होगी.

एक चौथाई

9 कल्ला बल् तु कज्जिबू ना बिद् दीन ५ ०		٩- كَلَّا بَلْ تُكَذِّبُونَ بِالدِّينِ ۝
10 व इन्ना अ़लै कुम् ल हाफ़िज़ ज़ीन ५ ०		١٠- وَإِنَّ عَلَيْكُمْ لَحٰفِظِينَ ۝
11 किरा मन् कातिबीन ५ ०		١١- كِرَامًا كَاتِبِينَ ۝
12 यअ़्लमू ना मा तफ़्अ़लून ०		١٢- يَعْلَمُونَ مَا تَفْعَلُونَ ۝
13 इन्नल् अब् रारा लफ़ी नअ़ीम ०		١٣- إِنَّ الْأَبْرَارَ لَفِي نَعِيمٍ ۝
14 व इन्नल् फ़ुज्जारा लफ़ी जहीम ८ ०		١٤- وَإِنَّ الْفُجَّارَ لَفِي جَحِيمٍ ۝
15 यस् लौ नहा यौ मद्दीन ०		١٥- يَصْلَوْنَهَا يَوْمَ الدِّينِ ۝
16 वमा हुम् अ़न्हा बि ग़ाइबीन ५ ०		١٦- وَمَا هُمْ عَنْهَا بِغَائِبِينَ ۝
17 वमा अद् राका मा यौ मुद्दीन ५ ०		١٧- وَمَا أَدْرَاكَ مَا يَوْمُ الدِّينِ ۝
18 सुम्मा मा अद् राका मा यौ मुद्दीन ५ ०		١٨- ثُمَّ مَا أَدْرَاكَ مَا يَوْمُ الدِّينِ ۝
19 यौमा ला तम् लिकु नफ़्सुल् लि नफ़्सिन् शैआ ५ वल् अम्रु यौमा इज़िल् लिल् लाह ६ ०	अर रुबअ़	١٩- يَوْمَ لَا تَمْلِكُ نَفْسٌ لِنَفْسٍ شَيْئًا ۚ وَالْأَمْرُ يَوْمَئِذٍ لِلَّهِ ۝

No 83 SURAH MUTAF-FI-FEEN (86)

(SURAH TATFEEF)

(DEFRAUDERS)

MAKKI, RUKU 1, AYATS 36,
WORDS 172 LETTERS 758

IN THE NAME OF ALLAH, MOST GRACIOUS, MOST MERCIFUL.

1 Woe to those who give short measure.

2 But who insist on being given full measure, when they take from others.

3 But while they give to others, they measure or weigh less.

4 Do they not think that they will be raised to life again.

5 On a Grievious Day.

6 That Day all mankind will stand before the RABB of all the worlds.

7 Indeed, the written record of the deeds of the wicked is in Sijjeen.

8 And how will you compre--hend what Sijjeen is?

नं. 83 सूरह् मुतफ़्फ़-फ़ि-फ़ीन (86)

(तत्फ़ीफ़) (धोके बाज़)

मक्की, रुकूअ़ 1, आयात 36
लफ़्ज़ 172, हरूफ़ 758

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं. जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 नाप और तोल में कम देने वालों की तबाही है.

2 लेकिन जब वो दूसरों से लें-तो ज़ोर देकर पूरा पूरा नाप तोल में लें.

3 लेकिन जब दूसरों को नाप कर या तोल कर दें-तो उन्हें कम दें.

4 क्या ये लोग नहीं समझते के ये लोग दुबारा उठा कर खड़े किये जायेंगे.

5 एक बड़े सख़्त दिन.

6 जिस दिन तमाम लोग रब्बुल आलामीन के सामने खड़े होंगे.

7 बेशक़ काफ़िरों का नामाए आमाल सिज्जीन में दर्ज हैं.

8 और तुमको क्या मालूम है के सिज्जीन क्या चीज़ है?

नं॰83 सूरा तुल् मुतफ़्फ़िफ़ीन (86)

(तत्फ़ीफ़)

मक्की, रुकूअ़ 1, आयात 36, लफ़्ज़ 172, हुरूफ़ 758

बिस्मिल्लाहिर् रह्मानिर् रहीम ○

1 वैलुल् लिल् मुतफ़्फ़िफ़ीन ○

2. अल् लज़ीना इज़ा क़ालू अ़लन् नासि यस्तौफ़ून ○

3 व इज़ा कालूहुम् अव् वज़ानूहुम् युख़्सिरून ○

4 अला य ज़ुन्नु उलाइका अन्नहुम् मब्अ़ूसून ○

5 लि यौमिन् अ़ज़ीम ○

6 यौमा यक़ूमुन्नासु लि रब्बिल् आलमीन ○

7 कल्ला इन्ना किताबल् फ़ुज्जारि लफ़ी सिज्जीन ○

8 वमा अद्राका मा सिज्जीन ○

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

١- وَيْلٌ لِّلْمُطَفِّفِيْنَ ۝

٢- الَّذِيْنَ اِذَا اكْتَالُوْا عَلَى النَّاسِ
يَسْتَوْفُوْنَ ۝

٣- وَاِذَا كَالُوْهُمْ
اَوْ وَّزَنُوْهُمْ يُخْسِرُوْنَ ۝

٤- اَلَا يَظُنُّ
اُولٰٓئِكَ اَنَّهُمْ مَّبْعُوْثُوْنَ ۝

٥- لِيَوْمٍ عَظِيْمٍ ۝

٦- يَّوْمَ يَقُوْمُ النَّاسُ
لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝

٧- كَلَّآ اِنَّ كِتٰبَ الْفُجَّارِ لَفِيْ سِجِّيْنٍ ۝

٨- وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا سِجِّيْنٌ ۝

9 It (i.e. Sijjeen) is a Record House of evil deeds - all is written down.

10 Woe, that Day to those who deny.

11 Those who deny the Day of Judgement.

12 Which none deny except the wicked, the transgressors.

13 When OUR revelations are recited before him he says: "These are the tales of the ancients."

14 No, in fact what they have been doing has rusted their heart.

15 No, but surely on that Day they will be screened off from the glory of their RABB

16 They will indeed enter in hell.

17 Then they will be told: "This is what you used to deny!"

9 ये (यानी सिज्जीन) बुरे आमालों के रिकार्ड का दफ़्तर है.

10 उस दिन झुठलाने वालों की तबाही है.

11 उनकी जो इंसाफ़ वाले दिन को झुठलाते हैं

12 उस दिन को तो वो ही झुठलाते हैं जो गुनहगार हैं और ज़ुल्म में हद से बढ़ जाने वाले हैं.

13 जब उसको हमारी आयात सुनाई जाती हैं तो वो कहता है: "ये तो पुराने लोगों की कहानियां हैं."

14 नहीं, बल्कि इनके दिलों पर इनके बुरे आमालों की वजह से ज़ंग लग गया है.

15 नहीं, उस दिन (यानी क़ियामत के दिन) ये लोग यक़ीनन अपने रब के दीदार से महरूम रखे जायेंगे.

16 वो दोज़ख़ की आग में यक़ीनन जा दाख़िल होंगे.

17 और उनसे कहा जायेगा: "ये वो ही जगह है जिसे तुम झुठलाया करते थे!"